प्रकृति चिंतन...

पं. नवीन जोशी

बेबस प्रकृति हरपल मानव को धिक्कारती है,
बचा लो मुझे हरदम महज यहीं पुकारती है।
यूं तो मेरे शहर में नेता रोज पौधें लगाते हैं,
पर्यावरण हितैषी होने का ढोंग भी रचाते हैं।
धूप के साए से कच्ची कलियां डर जाती हैं,
प्यास से व्याकुल हो पत्तियां झड़ जाती हैं।
आखिर कैसे भूल गए प्रकृति ही निस्वार्थी है।

बेबस प्रकृति हरपल मानव को धिक्कारती है,
बचा लो मुझे हरदम महज यहीं पुकारती है।
मेरे आंगन में पौधा अपनी कहानी कहता था,
उस पर जंगली कबूतर सपरिवार रहता था।
पत्थर मार किसी ने आशियाने को चूर किया,
जिंदगी कड़वी बनी मरने पर मजबूर कर दिया।
प्रकृति दूसरी मां है जो जीवन को सँवारती है।

बेबस प्रकृति हरपल मानव को धिक्कारती है,
बचा लो मुझे हरदम महज यहीं पुकारती है।
पर्यावरण हितैषी भी अब झण्डे देने लगे हैं,
पंछी खिड़की-रोशनदानों में अण्डे देने लगे हैं।
राक्षस धुआं पृथ्वी को खाकर भाग जाएगा,
'नवीन'आवाज देता रह,संसार जाग जाएगा।
इसके बिना न किसी की अजान न आरती है।

बेबस प्रकृति हरपल मानव को धिक्कारती है.
बचा लो मुझे हरदम महज यहीं पुकारती है।

शोध छात्र, पद्मश्री नारायणदास रामानन्ददर्शन अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर